मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय

देवास मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) 456 010

प्रवेश परिचायिका

सत्र 2022–2023

E-mail : regpsvvmp@rediffmail.com
Website : www.mpsvv.ac.in

पुरोवाक्

यावदस्ति त्रयी लोके चतुर्मुखमुखोद्भवा ।
तावदेषा देवभाषा, देवी स्थास्यति भूतले ।।

महाकविदण्डी काव्यादर्शे अवादीत् संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाख्याता महर्षिभिः दिव्यतायुक्तेयं भाषा अत एव वैश्विकविविधसमास्यायाः परिहारः अनया निबद्धैः विषयैः जायते इति सर्वविदितं जगत्सु । चत्वारो वेदाः षट्शास्त्राणि आयुर्वेदादयः याज्ञवल्क्यस्मृत्यादयः इति सर्वे जीवमात्रस्य कल्याणाय प्रयतन्ते । अस्माकं विश्वविद्यालयस्य आचार्याः विद्यार्थिनः ज्ञानेन विज्ञानेन राष्ट्रस्य सन्निर्माणे मानवर्द्धने च आधारस्तम्भाः भवेयुरिति मे द्रढीयान् विश्वासः । आत्मनिर्भरभारतस्य परिकल्पना यद्यपि संस्कृतविद्यायां भूयो भूयो विद्यते तथापि नवशिक्षानीतिरीत्या नूनं हि अध्येतारः सर्वाङ्गीणविकासयुजः भवेयुरिति कामायमानः । समेषां कल्याणमनेन मन्त्रेण आमन्त्रये ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुः खभाग्वेद् ।।

प्रो. विजयकुमारः सी.जी.
कुलपतिः

विश्वविद्यालय का प्रतीकचिह्न तथा आदर्शवाक्य

प्रतीकचिह्न – महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन की स्थापना के उपरान्त विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने हेतु एक प्रतीकचिह्न को स्वीकार किया गया है। इस प्रतीक चिह्न में आभायुक्त देदीप्यमान सूर्य, महाकालेश्वर मन्दिर का उत्तुंग शिखर,कलश एवं ध्वजा विद्यमान है। चिह्न के मध्य में प्रफुल्लित पद्मपुष्प (कमल पुष्प), पद्मपत्र (कमल के पत्ते), वाम एवं दक्षिण दिशा की ओर मुख किये हुए हंसयुगल विद्यमान हैं जो कि निर्मल प्रवहमान जलधारा में स्थित हैं।

विश्वविद्यालय का प्रतीकचिह्न भारतीय चिन्तनसरणि, उदात्तमनीषा, सत्संकल्प तथा दिव्यसंस्कार को **अभिव्यञ्जित** करता है। आभायुक्त सूर्य की दिव्य कान्ति सत्य एवं ज्ञान के प्रकाश तथा तप की द्योतक है। महाकालेश्वर मन्दिर का उत्तुंग शिखर श्रेष्ठता,उत्कर्ष एवं उन्नति तथा कलशज्ञानामृत के संग्रह एवं संरक्षण का परिचायक है। प्रवहमान ध्वजा उत्साह, ओज एवं प्रसार की सूचक है। प्रफुल्लित कमलपुष्प विविधता में एकात्मता के साथ समृद्धि, पवित्रता, सौन्दर्य तथा सुगन्धि का सन्देश दे रहा है। कमलपत्र निष्काम कर्मयोग एवं समर्पण भाव को अभिव्यक्त कर रहे हैं। हंसयुगल सौम्यता, शुभ्रता, गुणग्राहिता, विवेकशीलता एवं ज्ञान–विज्ञान के परिचायक हैं तथा प्रवाहमान निर्मल जलधारा शास्त्रपरम्परा एवं संस्कृति को अविरल प्रवाहमान रखने, अग्रसारित करने एवं दोषरहित रखने की द्योतक है।

आदर्शवाक्य विश्वविद्यालय का आदर्श एवं ध्येयवाक्य ''संस्कृतं नाम दैवीवाक्" है। यह आदर्शवाक्य महाकवि दण्डीकृत काव्यादर्श के प्रथम परिच्छेद की 33वीं कारिका का प्रथम चरण है, जिसका भावार्थ है – "महर्षियों ने संस्कृतभाषा को दिव्यवाणी कहा है"। संस्कृत भाषा पूर्णतः शुद्ध, परिष्कृत, दोष रहित एवं संस्कार युक्त है, अतः दैवी (दिव्य) भाषा है, जिसके व्यवहार मात्र से व्यक्ति देवत्व को प्राप्त होता है।

इस प्रकार विश्वविद्यालय का प्रतीकचिह्न स्वतः अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, परम्परा, उत्साह, समृद्धि, विवेक तथा संस्कृति के प्रवास का दिव्य समन्वय है।

विश्वविद्यालय की स्थापना एवं आरम्भ

1. संस्कृत भाषा एवं प्राचीन ज्ञान–विज्ञान परम्परा के संरक्षण अभिवर्धन एवं उन्मुखीकरण के लिए मध्यप्रदेश की प्राचीन पौराणिक नगरी उज्जैन में मध्यप्रदेश शासन के संकल्प से संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस हेतु शासन द्वारा "महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 (क्रमांक 15 सन् 2008)" के अन्तर्गत 15 अगस्त 2008 को 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय' उज्जैन की स्थापना की गई।

2. स्थापना के उपरान्त दिनांक 17 अगस्त 2008 को मध्यप्रदेश राज्य के तत्कालीन मुख्यमन्त्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में तत्कालीन राज्यपाल एवं कुलाधिपति माननीय श्री डॉ. बलराम जाखड़ द्वारा विश्वविद्यालय का विधिवत् शुभारम्भ किया गया। उज्जैन के देवास मार्ग स्थित बृजमोहन बिड़ला शोध संस्थान परिसर में शुभारम्भ विधि को सम्पन्न किया गया जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधियों सहित प्रशासन एवं गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

3. क्षिप्रांजलि न्यास की भूमि में स्थित बृजमोहन बिड़ला शोध संस्थान परिसर के भवन में किराया अनुबन्ध के आधार पर कक्षों को आवंटित कर विश्वविद्यालय का प्रशासनिक कार्यालय दिनांक 17 अगस्त 2008 से विधिवत् प्रारम्भ किया गया। प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त स्थान की उपलब्धता के आधार पर अध्ययन–अध्यापन आरम्भ करने की दृष्टि से इसी भवन में छात्रों के उपयोग हेतु पुस्तकालय एवं शैक्षणिक कार्यों की गतिविधियाँ भी आरम्भ की गईं।

4. विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु सुरम्य परिसर निर्माण एवं शैक्षणिक उपयोग के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा उज्जैन नगर के देवास मार्ग पर सीमान्त ग्राम मानपुरा, लालपुर में मुख्य मार्ग पर 10 हेक्टेयर (25 एकड़) भूमि का आवंटन किया गया। विश्वविद्यालय के लिए आवण्टित भूमि का अवलोकन एवं भूमि पूजन मध्यप्रदेश शासन के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री शिवराजसिंह चौहान के कर–कमलों द्वारा दिनांक 22 जनवरी 2009 को सम्पन्न हुआ।

5. विश्वविद्यालय की स्थापना के मूल सिद्धान्तों को विस्तारित करने के उद्देश्य से दिनांक 25.03.2010 को मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन के अधिनियम में 'एवं वैदिक' शब्द को जोड़ने के सम्बन्ध में संशोधन प्रस्ताव पारित किया गया। उक्त संशोधन पारित होने के उपरान्त इस विश्वविद्यालय का नाम 'महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय' के स्थान पर 'महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय' हुआ।

स्थापना एवं नामकरण

मध्यप्रदेश शासन द्वारा महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 (क्रमांक 15 सन् 2008) दिनांक 15.08.2008 के अंतर्गत मध्यप्रदेश में प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

अपने उच्चारण वैशिष्ट्य, वर्णमाला तथा सुस्पष्ट व्याकरण के कारण विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत के सर्वमान्य व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ के जनक महर्षि पाणिनि के सम्मान में इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी ।

उज्जैन भगवान् महाकाल की भूमि है। शिव वेदों में रुद्र नाम से पुकारे गये। व्याकरण शास्त्र की उत्पत्ति शिव के डमरू से निकले चतुर्दश (14) माहेश्वर सूत्रों से मानी गयी है। शिव के ताण्डव से नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति मानी जाती है, जो कि संगीत, साहित्य आदि कलाओं का बीज ग्रन्थ है। काल के नियामक के रूप में भी महाकाल मान्य हैं। उनकी इस भूमिका का जगत् में विशिष्ट महत्त्व है। भगवान् शिव बिना किसी भेद के सम्पूर्ण चराचर जगत् में सबको अपनाते हैं।

सब संस्कृत के लिए और संस्कृत सबके लिए इस भावना से कार्य करने वाले इस विश्वविद्यालय के लिए ऐसे शिव की पावन धरा का आश्रय लेना उपयुक्त ही है। साथ ही यह भूमि जगद्गुरु श्री कृष्ण की शिक्षा स्थली रही है। सान्दीपनि जैसे गुरु, कालिदास सदृश कवि, वराहमिहिर जैसे ज्योतिषी, विक्रमादित्य जैसे सम्राट् आदि महान् विभूतियों की यह कर्मभूमि है। इस उज्जयिनी के विषय में प्रसिद्ध है कि यहाँ अन्तः पुर की स्त्रियाँ भी संस्कृत बोलती थीं। स्त्री शिक्षा और सर्व शिक्षा को सर्वप्रथम साकार करने वाली यही धरा रही है। एतदर्थ संस्कृत विश्वविद्यालय के कार्यस्थल के रूप में उज्जैन का चयन अत्यन्त उपयुक्त है।

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय

देवास मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

परिचय – महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना मध्यप्रदेश में प्राचीन भारतीय शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा के संवर्धन तथा विकास को दृष्टिगत रखते हुए मध्यप्रदेश शासन द्वारा विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 के अधीन दिनांक 15 अगस्त 2008 को हुई। यहाँ सत्र 2009 से विधिवत् कक्षाओं का संचालन (अध्ययन / अध्यापन) प्रारम्भ है। यह विश्वविद्यालय उज्जैन में उज्जैन देवास मार्ग पर लगभग 25 एकड़ के क्षेत्रफल में निर्माणाधीन है। परिसर में प्रथम शैक्षणिक भवन का निर्माण हो चुका है। जहाँ सत्र 2015 से विश्वविद्यालय परिसर के सुरम्य तथा प्राकृतिक वातावरण में विद्यार्थियों को अध्ययन सुविधा प्राप्त होगी। यह विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा 2 (एफ) के अधीन मान्यता प्राम है।

विश्वविद्यालय का स्वरूप

पुराणप्रसिद्ध उज्जयिनी नगरी के निकट देवास मार्ग पर एक रमणीय उपत्यका (घाटी) क्षेत्र में विश्वविद्यालय परिसर विस्तीर्ण है। एक भव्य द्वार से प्रवेश करने के उपरान्त आपका प्रवेश विश्वविद्यालय के प्रथम शैक्षणिक परिसर **पञ्चवटी** में होगा। यह परिसर पाँच भवनों, मध्य के विशाल चत्वर (चबूतरे) तथा सुन्दर सुरभित वाटिका के कारण प्राचीन गुरुकुल का आभास देता है। नवागत प्रेक्षक को यह स्थान अद्भुत आनन्द और शान्ति प्रदान करता है। इस परिसर के निकट से चलकर चहुँ ओर हरे–भरे पुष्पित पादपों का अवलोकन करते हुए आप जैसे– जैसे अधित्यका पर चढ़ते हैं, आपको श्रीकृष्णयोग भवन तथा आचार्य सांदीपनि भवन दिखाई देते है। और ऊपर बढ़ने आपको **पतञ्जलि** भवन के दर्शन होते हैं , जिसमें विश्वविद्यालय का प्रशासनिक कार्यालय विद्यमान है। यहाँ प्राङ्गण में खड़े होकर आप उन आधार भूमियों की ओर दृष्टिपात करते हैं, जहाँ शीघ्र ही विस्तृत शैक्षणिक परिसर, प्रशासनिक परिसर, विशाल सभागार आदि भवनों का निर्माण प्रस्तावित है। यहाँ से थोड़ी और ऊँचाई पर पहुँचकर आपको विशाल मैदान के दर्शन होते हैं, जहाँ बहूद्देशीय क्रीडांगण, वेधशाला आदि का निर्माण कल्पित है। साथ ही परिसर में भरत के रंगमंच, नक्षत्र वाटिका, नवग्रह वाटिका, नलिन सरोवर, यज्ञशाला, पुस्तकालय भवन, वैदिक यज्ञीय उपकरण संग्रहालय, ज्योतिष प्रयोगशाला, कम्प्यूटर प्रयोगशाला, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, उच्चारण तथा ध्वनि अनुसन्धान केन्द्र, छन्द मन्दिर, संस्कृत वीथिका, शिक्षा सुभाषित भित्ति, फलोद्यान, आवासगृह आदि के निर्माण की योजना चिन्तन स्तर पर है। भविष्य में यह परिसर देश विदेश के छात्रों, शिक्षाविदों तथा यात्रियों के लिए आकर्षण तथा प्रेरणा का केन्द्र रहेगा।

विभाग परिचय

वेद एवं व्याकरण विभाग

परिचय – व्याकरण सदैव भाषा अध्ययन का एक अभिन्न अंग रहा है। पाणिनीय व्याकरण को मानव मस्तिष्क की सबसे महान कृतियों में से एक माना जाता है। संस्कृत व्याकरण का अध्ययन सहयोगी भारत–यूरोपीय भाषाओं के आलोक में तुलनात्मक आधार पर किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में संस्कृत शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया है। वेद अपने आप में शोध एवं शिक्षा की अपार संभावनाएं रखते हैं। संस्कृत साहित्य को समझने के लिए वेद और व्याकरण का ज्ञान महत्वपूर्ण है। संस्कार एवं व्यवहार में परिष्कार भारतीय शास्त्रों से ही संभव है।

वेद एवं व्याकरण विभाग – 2012 को स्थापित। विभाग वेद, व्याकरण और अन्य संबद्ध विषयों में कई स्नातक, स्नातकोत्तर और डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करता है। इसने विषय को रोचक तरीके से पढ़ाने के लिए विद्वान शिक्षकों को नियुक्त किया है। विभाग में कुल 6 शैक्षणिक पद प्रस्तावित हैं, जिनमें से 1 प्रोफेसर, 2 एसोसिएट प्रोफेसर और 3 असिस्टेंट प्रोफेसर के पद हैं। वर्तमान में असिस्टेंट प्रोफेसर के दो पद भरे हैं। विभाग में आवश्यकतानुसार अतिथि विद्वान् की नियुक्ति की जाती है।

ध्येय वाक्य
वाग्वैब्रह्म
(छान्दग्योपनिषद्)
(शुद्ध वाणी ही ईश्वर है)

संस्कृत साहित्य विभाग

परिचय – संस्कृत भाषा और साहित्य भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक लोकाचार का आधार हैं। साहित्य किसी भी सामाजिक समाज की रीढ़ होता है। समृद्ध भारतीय साहित्य मुख्यतः संस्कृत भाषा में रचा गया है। प्राचीन भारत में संस्कृत मातृभाषा थी। वाल्मिकी, वेदव्यास, भरत मुनि, कालिदास, दंडिन, बाणभट्ट, राजशेखर जैसे कई लोकप्रिय लेखक हुए हैं। मम्मथ और कई अन्य जिन्होंने अपने विपुल लेखन के माध्यम से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। पाणिनि विश्वविद्यालय महर्षि का संस्कृत साहित्य एवं दर्शन विभाग वेद, वेदांग एवं साहित्य संकाय के अंतर्गत आता है। विभाग का प्रारम्भ वर्ष 2012 में हुआ था। इसके अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य की विभिन्न शाखाओं, ग्रंथों में निहित दर्शन से अवगत कराना और इसमें निहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली के अनमोल भंडार के बारे में सीखना था। विभाग का लक्ष्य छात्रों को शिक्षित करना और उन्हें स्वतंत्र बनाना है। हम भी चाहते हैं कि समाज में सम्मान मिले।

संस्कृत के लिए जगह विभाग में कुल 6 शैक्षणिक पद प्रस्तावित हैं, जिनमें से 1 प्रोफेसर, 2 एसोसिएट प्रोफेसर और 3 असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए हैं। वर्तमान में एसोसिएट प्रोफेसर का 1 पद भरा हुआ है तथा 1 पद शेष है।

ध्येय वाक्य
सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्
महान श्रवण वाली सरस्वती की महिमा हो।

ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग

परिचय – 2012 से स्थापित ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान संस्कृत अध्ययन के सबसे उभरते क्षेत्रों में से एक है। महर्षि पाणिनी संस्कृत विश्वविद्यालय के अन्य विभागों में से ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग का उज्जैन शहर से गहरा संबंध है। प्रारंभ में विभागों को ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान के रूप में प्रारम्भ किया गया था, लेकिन बाद में उन्हें एक ही विभाग में विलय कर दिया गया, जिसका नाम ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग रखा गया। विभाग ज्योतिष और सिद्धांत ज्योतिष के लिए शास्त्री और आचार्य दोनों पाठ्यक्रम चलाता है। विभाग में स्नातकोत्तर कक्षाएँ भी आयोजित की जाती हैं। ये सभी पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप हैं।

ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान की सामग्री साहित्यिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विभाग खगोलीय और वास्तुकला अध्ययन के इस प्राचीन खजाने के पुनरुद्धार के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। विभाग का लक्ष्य ज्योतिर्विज्ञान और उसके संबद्ध विषयों में निहित ज्ञान को संरक्षित करना है। हम छात्रों के प्रश्नों को संतुष्ट करना चाहते हैं और उनके समग्र विकास में योगदान देना चाहते हैं।

विभाग में कुल 6 शैक्षणिक पद प्रस्तावित हैं, जिनमें से प्रोफेसर के हैं। एसोसिएट प्रोफेसर के लिए 2 और असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए 3 पद हैं। वर्तमान में असिस्टेंट प्रोफेसर के दो पद रिक्त हैं। विभाग में आवश्यकतानुसार अतिथि विद्वान की नियुक्ति की जाती है।

ध्येय वाक्य

वेदाङ्गं ज्योतिषं ब्रह्म

वेदाङ्ग ज्योतिष ही ब्रह्म है।

(बृहस्पति संहिता)

विशिष्ट संस्कृत विभाग

परिचय – संस्कृत भाषा मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। यह ग्रीक से अधिक परिपूर्ण है, लैटिन से अधिक प्रचुर है, और अपनी अद्भुत संरचना के कारण अधिक उत्कृष्ट रूप से परिष्कृत है। संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा मानी जाती है। इसका उपयोग भारतीय इतिहास के सभी कालखंडों में काव्यात्मक और अन्य साहित्यिक कार्यों के लिए किया जाता रहा है और आज भी जारी है। विशिष्ट संस्कृत विभाग छात्रों को संस्कृत साहित्य के कुछ चुनिंदा ग्रंथ पढ़ाता है जो मानवतावादी और कलात्मक गतिविधियों के आदर्श उदाहरण हैं। इस तरह के अध्ययन से छात्रों में अच्छे नैतिक मूल्यों का विकास होता है और हमारा कायाकल्प भी होता है।

पारंपरिक भारतीय संस्कृति. महर्षि पाणिनी विश्वविद्यालय के विशिष्ट संस्कृत विभाग की स्थापना वर्ष 2012 में हुई थी। इसका उद्देश्य विभिन्न वेद, वेदांगों में निहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रसार करना है। पुराण, दर्शन और उपनिषद। विभाग स्नातक और स्नातक स्तर पर विभिन्न पाठ्यक्रम चलाता है। विभाग में पढ़ने वाले छात्र वेद, विद्या, उपनिषद, पुराण, दर्शन, भाषा विज्ञान और संस्कृत साहित्य की अन्य शाखाओं जैसे विषयों के बारे में सीखते हैं। हमारे विभाग में कई छात्रों ने अपनी शोध डिग्री भी पूरी की है। हमारा लक्ष्य अपने छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना और उन्हें उनके विषय के बारे में अधिक जानकार बनाना है।

विभाग में कुल 6 प्रस्तावित शैक्षिक पद हैं, जिनमें से 1 प्रोफेसर, 2 एसोसिएट प्रोफेसर और 3 असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए हैं। वर्तमान में असिस्टेंट प्रोफेसर का एक पद रिक्त है।

ध्येय वाक्य

सा विद्या या विमुक्तये

वही ज्ञान है जो मुक्ति की ओर ले जाता है।

(वि. पु. १/४१/१६)

योग विभाग

परिचय – योग विभाग की स्थापना महर्षि पाणिनी संस्कृत और वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा 2018 में की गई। योग विभाग का मुख्य उद्देश्य योग की परंपरा को वैज्ञानिक तरीके से युवा पीढ़ी तक फैलाना है। विभाग योग से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे एमए योग और यौगिक अध्ययन में यूजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाता है। पाठ्यक्रम मुख्य रूप से हिंदी भाषा में आयोजित किए जाते हैं, लेकिन योग पाठ को समझने के लिए पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषण का विषय भी शामिल किया गया है। योग गलत जीवनशैली से पैदा हुई कई समस्याओं का समाधान देता है। इसलिए छात्रों के लिए योग पाठ्यक्रम के अंतर्गत योग थेरेपी को भी शामिल किया गया है। शिक्षक नियमित रूप से सुबह की व्यावहारिक कक्षाएं लेते हैं ताकि छात्रों को विभिन्न योगिक मुद्राएं और आसन सीखने को मिलें।

ध्येय वाक्य
योगस्थः कुरू कर्माणि
योगी बन कर्म करो
(भगवद्गीता 2.48)

शिक्षाशास्त्र विभाग

परिचय – विश्वविद्यालय का शिक्षा विभाग वर्ष 2018 में स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना का एकमात्र उद्देश्य छात्रों को भावी शिक्षक बनना सिखाना था। विश्वविद्यालय चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम चलाता है। कार्यक्रम चार साल का पाठ्यक्रम विभिन्न शिक्षण कौशलों के ज्ञान और छात्रों को प्रभावी तरीके से ज्ञान प्रदान करने की पद्धति से संबंधित है।

बी.एबी.एड. पाठ्यक्रम न केवल छात्रों को अच्छे शिक्षण कौशल सिखाता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि शैक्षिक प्रणाली के प्रशासनिक ब्लॉक में कैसे काम किया जाए। ये कौशल उन्हें शिक्षण के विभिन्न तकनीकी पहलुओं के बारे में जानकार बनाते हैं। छात्र दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, नैतिक मूल्यों जैसे विभिन्न विषयों का अध्ययन करते हैं। उनके समग्र विकास और सांसारिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए शिक्षण, अनुसंधान पद्धति, संस्कृत और विभिन्न अन्य विषय। संस्कृत भाषा का अध्ययन उन्हें भाषा के बारे में अपने ज्ञान को बेहतर बनाने में मदद करता है। यह हमारे प्राचीन नैतिक मूल्यों के अध्ययन और संरक्षण में भी मदद करता है।

छात्रों को अभ्यास शिक्षण कराया जाता है ताकि वे स्थूल और सूक्ष्म दोनों शिक्षण कौशल प्रभावी ढंग से सीख सकें। विभाग छात्रों के कौशल को विकसित करने के लिए विभिन्न पाठ्यचर्या और सह–पाठयक्रम गतिविधियों का उपयोग करता है। बी.एबी.एड. डिग्री रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम है जहां छात्रों का समग्र विकास होता है। विभिन्न छात्रों ने B.A.B.Ed किया है। इस विश्वविद्यालय से और एक उत्कृष्ट प्लेसमेंट रिकॉर्ड हासिल किया है।

विभाग में कुल 6 शैक्षिक पद प्रस्तावित हैं, जिनमें से प्रोफेसर के लिए 01, एसोसिएट प्रोफेसर के लिए 2 और असिस्टेंट प्रोफेसर के लिए 3 पद हैं।

ध्येय वाक्य
शिक्षयेत्पुरुष कर्म कर्मणा येन जीवति
मनुष्य को जिस कर्म से जीवन जीना है, उसे ही करना सीखना चाहिए।
(वि. धर्मा. पु. ३३०३/१२)

संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण एवं ज्ञान विज्ञान संवर्धन केन्द्र

विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2018 में संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण एवं ज्ञान विज्ञान संवर्धन केंद्र की स्थापना की गई थी। इस विभाग की स्थापना का मुख्य उद्देश्य आम जनमानस तक संस्कृत भाषा का प्रचार–प्रसार करना था। पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय छात्रों को संस्कृत का ज्ञान देने के लिए अपने स्तर पर काम कर रहा था। किन्तु शनैः शनैः यह अनुभव हुआ कि औपचारिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है। संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। इसलिए, एक नया केंद्र खोला गया. यह केंद्र विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित करता है जो संस्कृत भाषा को समाज में लोगों तक पहुँचाता है।

केंद्र का कार्यालय उज्जैन में है और इसका कार्य क्षेत्र संपूर्ण मध्य प्रदेश में है। इस केंद्र की स्थापना का एकमात्र उद्देश्य समाज में लोगों को संस्कृत भाषा से परिचित कराना था। तभी महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

उद्देश्य –

1. संस्कृत भाषा के माध्यम से संस्कृत शिक्षा।

आज संस्कृत के छात्र उच्च स्तरीय शास्त्री पाठ्यक्रम को सिर्फ इसलिए नहीं समझ पाते क्योंकि उनमें संस्कृत भाषा का प्रवाह नहीं है। इसलिए, छात्रों को संस्कृत सिखाने का एकमात्र समाधान संस्कृत भाषा का दीर्घकालिक अनुभव है। संस्कृत भाषा के माध्यम से संस्कृत पढ़ाना ही संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण ज्ञान एवं विज्ञान प्रचार केन्द्र का एकमात्र उद्देश्य है।

दर्शन विभाग

दर्शन संकाय के अन्तर्गत दर्शन विभाग संचालित है। स्वतंत्र रूप से यह विभाग सत्र 2021 से संचालित है। भारतीय पारम्परिक दर्शनशास्त्रीय परम्परा के संरक्षकार्थ एवं संवद्धनार्थ यह विभाग गठित किया गया है। वर्तमान में न्याय दर्शन तथा अद्वैत दर्शन पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे है।

ध्येय वाक्य

तत्त्वमसि

(ब्रह्म तुम ही हो)

प्रवेश सूचना

विश्वविद्यालय के अध्यापन विभागों में संचालित पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। प्रवेश तिथि की अन्तिम तिथि 30 जुलाई 2022 है।

इस पुस्तिका में पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्हता, सीट संख्या, शुल्क आदि का विवरण दिया गया है। प्रवेश प्रक्रिया तथा पाठ्यक्रमों आदि से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी के लिए प्रवेश समिति के सदस्यों से सम्पर्क करें। अथवा विश्वविद्यालय की बेवसाईट www-mpsvv.ac.in का अवलोकन करें।

कुलसचिव

प्रवेश समिति सत्र 2022–23

क्र.	नाम	दायित्व	मोबाईल
1	डॉ.शुभम् शर्मा (विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, ज्योतिर्विज्ञान विभाग एवं शिक्षास्त्र विभाग)	अध्यक्ष	9425464550
2	डॉ. तुलसीदास परौहा (विभागाध्यक्ष, साहित्य विशिष्ट संस्कृत विभाग)	सदस्य	9479479986
3	डॉ. अखिलेशकुमार द्विवेदी (विभागाध्यक्ष, वेद एवं व्याकरण एवं दर्शन विभाग)	सदस्य	8982314123
4	डॉ. उपेन्द्र भार्गव (विभागाध्यक्ष, योग विभाग)	सदस्य	8827766667

प्रवेश के सामान्य नियम :–

प्रवेशार्थी को निम्नलिखित प्रमाण पत्र संलग्न करना आवश्यक है–

1. पूर्व उत्तीर्ण परीक्षाओं की अंकतालिका तथा प्रमाण पत्र की छायाप्रतियाँ
2. स्थानान्तरण प्रमाण पत्र (टी.सी.) तथा प्रव्रजन प्रमाण पत्र (माइग्रेशन)
4. मूल निवासी प्रमाण पत्र (यदि अपेक्षित हो)
5. आय प्रमाण पत्र (यदि अपेक्षित हो)
7. विकलांगता प्रमाण पत्र (यदि अपेक्षित हो)
8. शपथ पत्र (एफीडेविट) – (यदि अपेक्षित हो)

विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग

पाठ्यक्रमों में स्थानों की संख्या अर्हताएँ एवं शुल्क

No. of Seats] Qualifications and Fees

क्र.	संकाय	विभाग का नाम	पाठ्यक्रम का नाम	निर्धारित स्थान	अवधि	प्रवेशाहर्ता	वार्षिक शुल्क छात्र	छात्रा
1	शिक्षा संकाय	शिक्षा शास्त्र विभाग	शास्त्री शिक्षाशास्त्री (B.A.Bed.) (स्नातक)	50	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायरसेकेण्डरी उत्तीर्ण	23000	23000
2	वेद वेदांग एवं साहित्य संकाय	वेद एवं व्याकरण विभाग	**शास्त्री (स्नातक)** 1.शुक्लयजुर्वेद 2. नव्यव्याकरण	 20 20	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायरसेकेण्डरी उत्तीर्ण	3700	3500
			आचार्य (स्नातकोत्तर) 1.शुक्लयजुर्वेद 2. नव्यव्याकरण	 10 05	04 सेमेस्टर	शास्त्री / किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	4000	3700
			पत्रोपाधि (स्नातक स्तर) 1. कर्मकाण्ड 2. मंदिर प्रबंधन	 20 10	02 सेमेस्टर	उत्तरमध्यमा / हायरसेकेण्डरी उत्तीर्ण	3100	3100
			पत्रोपाधि (स्नातकोत्तर) 1. कर्मकाण्ड पौरोहित्य	 20	02 सेमेस्टर	शास्त्री किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	10000	10000
		संस्कृत साहित्य विभाग	**शास्त्री (स्नातक)** 1. संस्कृत साहित्य	 10	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायरसेकेण्डरी उत्तीर्ण	3700	3500
			आचार्य (स्नातकोत्तर) 1. साहित्य	 10	04 सेमेस्टर	शास्त्री / किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	4000	3700
			पत्रोपाधि (स्नातकस्तर) 1. पर्यटक मार्गदर्शन	 10	01 वर्ष	उत्तरमाध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	3100	3100
		ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग	**शास्त्री (स्नातक)** 1. फलितज्योतिष 2. सिद्धांत ज्योतिष	 20 05	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायरसेकेण्डरी उत्तीर्ण	3700	3500
			आचार्य (स्नातकोत्तर) 1. फलितज्योतिष 2. सिद्धांतज्योतिष	 10 05	04 सेमस्टर	शास्त्री / किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	4000	3700
			एम.ए. (स्नातकोत्तर) 1. ज्योतिर्विज्ञान 2. वास्तुशास्त्र	 20 10	04 सेमेस्टर	किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	4000	3700
			पत्रोपाधि (स्नातकस्तर) 1. वैदिक गणित 2. वास्तु 3. ज्योतिर्विज्ञान	 10 10 10	01 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	3100	3100
3	दर्शन संकाय	दर्शन विभाग	**शास्त्री (स्नातक स्तर)** 1. न्याय दर्शन	 05	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	4000	3700
			आचार्य (स्नातकोत्तर) 1. न्याय दर्शन 2. अद्वैत वेदान्त दर्शन	 10 05	04	शास्त्री किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	4000	3700

4	कला संकाय	विशिष्ट संस्कृत विभाग	**बी.ए. ऑनर्स (स्नातक)** 1. संस्कृत	05	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	3700	3500
			एम.ए. (स्नातकोत्तर) 1. संस्कृत	20	04 सेमेस्टर	किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	4000	3700
			पत्रोपाधि पाठ्यक्रम 1. संस्कृत सम्भाषण	20	01 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	3100	3100
5	प्राचीन विज्ञान संकाय	योग विभाग	बी.ए. / शास्त्री (स्नातक) 1. योगशास्त्र	05	04 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	3700	3500
			एम.ए. (स्नातकोत्तर) 1. योग	20	04 सेमेस्टर	किसी भी विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण	9900	9900
			एम.एस.सी. (स्नातकोत्तर) 1. योगविज्ञान	10	04 सेमेस्टर	किसी भी विज्ञान विषय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण तथा एम.ए.योग उत्तीर्ण	17850	17850
			पत्रोपाधि पाठ्यक्रम 1. योग (स्नातक)	10	01 वर्ष	उत्तरमध्यमा / हायर सेकेण्डरी उत्तीर्ण	3100	3100
			पत्रोपाधि पाठ्यक्रम 1. योग (स्नातकोत्तर)	10	1 वर्ष	किसी भी विषय में स्नातक परीक्षा	10000	10000

उपर्युक्त शुल्क नवीन प्रवेशार्थी छात्रों के लिए है। पूर्व प्रविष्ट छात्रों से अवधान शुल्क (Caution Money) रु. 500/– नहीं लिया जाएगा।

विश्वविद्यालय के अध्यापन विभागों में संचालित पाठ्यक्रमों में सत्र 2022 –2023 में प्रवेश हेतु इच्छुक विद्यार्थियों से प्रवेश आवेदन निम्नानुसार आमंत्रित किये जाते है –

निर्देश :–

1. सभी प्रवेशार्थियों को ऑनलाइन पोर्टल शुल्क 272/–रूपये पृथक से देय होगा।
2. मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा सत्र 2022–23 हेतु दिनांक 15.05.2020 को जारी किये गए प्रवेश नियम तथा मार्गदर्शी सिद्धान्त ही प्रवेश हेतु अधिमान्य है।
3. ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया पूर्ण करने के उपरांत विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्र/विभाग में ऑनलाइन भरा गया आवेदन पत्र तथा अपलोड किये गये सभी दस्तावेजों को प्रिन्ट करके प्रवेश समिति द्वारा निर्धारित तिथि तक जमा करना अनिवार्य होगा तथा प्रवेश समिति द्वारा निर्धारित अवधि में (डिग्री पाठ्यक्रमों के छात्रों को मूल दस्तावेजों के साथ काउंसिलिंग हेतु उपस्थित होना होगा। टी.सी /माईग्रेशन की मूल प्रति जमा करना अनिवार्य होगा।
4. शास्त्री, शिक्षाशास्त्री (B.A.B.Ed.) पाठ्यक्रम में प्रवेश मध्यप्रदेश शासन द्वारा जारी आदेश क्रमांक 332 दिनांक 12.05.2022 के अधीन सत्र 2022–2023 के मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अधीन एम.पी. ऑनलाइन (MP Online) के माध्यम से होगा।
5. विश्वविद्यालय के अध्यापन विभागों में स्नातक/स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम में नियमित रूप से अध्ययनरत छात्र किसी भी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में केवल शिक्षण शुल्क परिचय पत्र शुल्क जमा कर प्रवेश प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार उन्हें सत्र 2022–2023 की डिप्लोमा प्रवेश शुल्क में 2000/–रू. की छूट रहेगी।
6. प्रवेश सूची में प्रवेशार्थी का नाम प्रकाशित होने पर प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण मानी जायेगी।
7. ऐसे प्रवेशार्थी जिनकी प्रवेशार्ह परीक्षा में संस्कृत विषय नहीं है उन्हें संस्कृत माध्यम के पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने पर संस्कृत सम्भाषण का डिप्लोमा या संस्कृत–वाग्व्यवहार सर्टिफिकेट करना अनिवार्य होगा।
8. प्रवेश प्रक्रिया से सम्बन्धित जानकारी के लिए निम्नलिखित मोबाइल नं. पर सम्पर्क करें – 9737793210,9425464550, 9479479986, 7987559065, 8827087772

विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग तथा कार्यरत प्राध्यापक

संकाय	विभाग	कार्यरत प्राध्यापक
वेद वेदांग एवं साहित्य संकाय	संस्कृत साहित्य एवं दर्शन विभाग	डॉ. तुलसीदास परौहा एसो. प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष
–''–	वेद एवं व्याकरण विभाग	डॉ. अखिलेशकुमार द्विवेदी असि. प्रोफेसर–नव्यव्याकरण डॉ. संकल्प मिश्र असि. प्रोफेसर–शुक्लयजुर्वेद
–''–	ज्योतिष एवं ज्योतिर्विज्ञान विभाग	डॉ. शुभम् शर्मा असि. प्रोफेसर–ज्योतिर्विज्ञान डॉ. उपेन्द्र भार्गव असि. प्रोफेसर–सिद्धान्त ज्योतिष
कला संकाय	विशिष्ट संस्कृत प्राच्य विभाग	डॉ. पूजा उपाध्याय असि. प्रोफेसर–दर्शनशास्त्र
शिक्षा संकाय	शिक्षाशास्त्र विभाग	–

पाठ्यक्रम सहगामी कार्यक्रम –

विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा प्रातिभ प्रकर्ष को दृष्टिगत करके निम्नलिखित सहगामी कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है।

1. वाग्वर्धिनी सभा– विद्यार्थियों की वाक् क्षमता, शास्त्रीय पाण्डित्य एवं विषय प्रतिपादन सामर्थ्य विकास के लिए परिसर में वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन प्रति सप्ताह किया जाता है। जिसमें आचायों के मार्गदर्शन में छात्र–छात्राएँ ज्योतिष, वेद, साहित्य, व्याकरण आदि विषयों की चर्चा तथा व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

2. शास्त्रार्थ प्रशिक्षण – परिसर में विभिन्न शास्त्रों के मार्मिक एवं दुरुह पक्षों के परिष्कार हेतु विद्यार्थियों को शास्त्रार्थ का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें किंसी शास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त पर पूर्वपक्ष तथा उत्तरपक्ष के साथ शास्त्रसम्मत प्रामाणिक तर्क उपस्थापित किये जाते हैं तथा उसके सैद्धान्तिक निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है।

3. व्याख्यान माला– परिसर में शिक्षा सत्र के मध्य विभिन्न अवसरों पर शास्त्रीय व्याख्यान माला का आयोजन किया जाता है। जिसमें सम्बद्ध विषयों के पारंगत विद्वानों का व्याख्यान आयोजित किया जाता है। इससे छात्रों को अधीत शास्त्रीय विषय को गहराई तथा व्यापकता से जानने का लाभ प्राप्त होता है।

4.युवा महोत्सव – परिसर में शिक्षा सत्र के मध्य युवा महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिसमें अध्यापन विभाग के अतिरिक्त सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्रों को भी बुलाया जाता है। महोत्सव में अनेक शैक्षणिक तथा खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

5. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण– विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त छात्रों के लिए वर्ष पर्यन्त संस्कृत सम्भाषण की निःशुल्क कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिससे छात्र संस्कृत बोलने, लिखने, पढ़ने तथा अनुवाद करने में समर्थ हो सकें।

6. शोध संगोष्ठी– शोधार्थियों तथा प्राध्यापकों के अनुसन्धानात्मक कौशल विकास के लिए समयानुसार शास्त्रीय विषयों पर केन्द्रित शोध संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

सुविधाएँ –

1. पुस्तकालय – विश्वविद्यालय में प्रवेश पात्र छात्रों के लिए पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध है।

2. छात्रवृत्ति – विश्वविद्यालय में अध्ययनरत नियमित छात्र, म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग की विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ ले सकते हैं। SC/ST तथा OBC छात्रों को मध्यप्रदेश से शासन द्वारा प्रदेश छात्रवृत्ति की विशेष सुविधायें उपलब्ध करायी जाती है।

3. उच्चशिक्षा ऋण – योजना का लाभ म.प्र. शासन के निर्देशों के अधीन ले सकते हैं। उब शिक्षा ऋण हेतु www.dif.mp.gov.in पर आन लाइन आवेदन करें।

4. छात्रावास– छात्रों हेतु छात्रावास उपलब्ध है। इस सत्र से छात्राओं हेतु भी पृथक छात्रावास सुविधा प्रदान की जाएगी।

N.S.S.– छात्रों के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना में सहभागिता की सुविधा है। विश्वविद्यालय N.C.C. के लिए भी योजनारत है।

5. प्रकाशन– सम्प्रति विश्वविद्यालय द्वारा त्रैमासिक सान्दर्भिक शोध पत्रिका पाणिनीया (I.S.S.N.–2321–7626) का प्रकाशन किया जा रहा है, जो स्नातकोत्तर तथा शोध छात्रों हेतु उपयोगी है।

पाठ्यक्रम वैशिष्ट्य

इस विश्वविद्यालय में संचालित समस्त पाठ्यक्रम यू.जी.सी. तथा म.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त हैं तथा अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों के समान यहाँ के सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. के दिशा निर्देशों के अनुसार संचालित किये जाते हैं।

.संस्कृत विषय में इन्टिग्रेटेड 'बी.ए.– बी.एड् (शास्त्री–शिक्षाशास्त्री)' प्रारम्भ करने वाला यह देश का प्रथम विश्वविद्यालय है। चार वर्ष के सम्मिलित पाठ्यक्रमों में छात्र शिक्षाशास्त्र का अध्ययन भी करेगा और शास्त्री पाठ्यक्रम का भी जो उसके भविष्य के लिए उत्तम सिद्ध होगा।

'साहित्य' विषय में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त छन्द गायन की पद्धतियों, साहित्य एवं साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थों का उत्तमटीकाओं के सहयोग से अध्यापन किया जाता है।

'विशिष्ट संस्कृत' विषय में बी.ए. तथा एम.ए. कक्षाओं में समग्र संस्कृत वाङ्मय के चयनित बिन्दुओं को पाठ्यक्रमों में स्थान देकर वृत्ति केन्द्रित शिक्षण को प्रोत्साहित किया जाता है।

'शुक्लयजुर्वेद' की मौखिक परम्परा के संरक्षण के साथ सुप्रसिद्ध टीकाओं से अध्यापन किया जाता है।

'नव्यव्याकरण' के अध्यापन में उच्चारण वैशिष्ट्य को सरल उपायों से छात्रों के मस्तिष्क में सुस्थापित किया जाता है।

प्रायोगिक सर्वेक्षण (कुण्डली, हस्तरेखा) द्वारा 'फलित ज्योतिष' तथा यंत्र निर्माण एवं प्रयोग द्वारा 'सिद्धान्त ज्योतिष' विषयों का अध्यापन होता है। नवीन शिक्षण पद्धति पर आधारित 'एम.ए.ज्योतिर्विज्ञान' तरुणों तथा वरिष्ठों को समान रूप से आकर्षित करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वास्तुशास्त्र के अनुसार भवनादि के मानचित्र निर्माण कर प्रायोगिक अध्ययन कराया जाता है। एम.ए. वास्तुशास्त्र के पाठ्यक्रम को शास्त्रीय आधार के साथ अभियान्त्रिकी, भूगोल और पुरातत्त्व सिद्धांतों से भी समृद्ध किया गया है ताकि विद्यार्थी वर्तमानकाल में एक सम्पूर्ण वास्तुविद् बन सके। योग विषय में दार्शनिक सिद्धांतों के साथ प्रायोगिक अध्ययन की सुविधा है। छात्रों में शास्त्रार्थ परम्परा के विकास एवं सम्वर्धन हेतु 'न्याय दर्शन' का परम्परागत अध्यापन किया जाता है।

शिक्षक छात्र सम्बन्ध

हमारे विश्वविद्यालय में छात्र और शिक्षक सन्तान और अभिभावक की भाँति एक परिवार के रूप में रहते हैं। जहाँ छात्र गुरु का सम्मान करते हैं तो वहीं गुरु शिक्षा के साथ उनके बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं शारीरिक विकास को सुनिश्चित करते हैं।अध्यापन में संवाद, प्रायोगिक, कथोपकथन, क्रीडासह शिक्षण आदि शैलियों का प्रयोग किया जाता है। यहाँ शिक्षकों का पूर्ण प्रयास रहता है कि वे छात्रों की उत्तरोत्तर शैक्षणिक उन्नति के साथ ही उनमें मानवीयता की भावना को सुविकसित करें।छात्रों को मात्र जापक शुक (रट्टू तोता) या मशीनी मानव बनने से रोकना, उनके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आर्थिक भविष्य को सुरक्षित करने हेतु पथप्रदर्शन करना शिक्षकों का सहजकर्म है।